प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंदजी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 18 * JULY 2008 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	04.07.08[P]	30				गीता-अ०२/१६: देह-देही २ तत्व हैं, द्रष्टा-देही मैं हूँ व सब दृश्य-देह मेरी माया से बने हैं किन्तु वे मुझसे अभिन्न व असंग हैं	3
2	05.07.08[P]	30				गीता-अ०२/१६-१७: **दो ही पदार्थ** हैं, **सत्** जो सदा रहे **असत** जो न हो पर दिखे, तेरा स्वरूप सच्चिदानंद है दृश्य माया है	4
3	06.07.08[P]	31				भगवान का चिन्तन ही श्रेष्ठ है चाहे प्रेम से अथवा बैर से, कंस, शिशुपाल, पौंड्र, पूतना एवं परशुराम की कथा	
4	07.07.08[P]	32				**स्वरूप ज्ञान** : **बुद्धि** राधा है जगत **रास** है और कृष्ण **रस**/आनंद हैं, बुद्धि ही जीव-ईश्वर के देह उत्पन्न करती है	**
5	08.07.08	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
6	09.07.08[P]	30				**श्रेय**-नित्य एवं **प्रेय**-आभाससुख निरूपण	
7	10.07.08[P]	28				गीता-अ०२/१८ ब्रह्म का नि० नि० स्वरूप निरूपण ** 21 - 25 m **	**
8	11.07.08[P]	30				गीता-अ०२/१७-२० आत्मस्वरूप निरूपण	
9	12.07.08[P]	31				**क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो पदार्थ हैं**, सभी दृश्य जड़ देह विकारी-**क्षेत्र** व द्रष्टा-साक्षी जीवात्मा देही अविकारी-**क्षेत्रज्ञ** हैं, वही तू है	
10	13.07.08	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
11	14.07.08	44				सनतकुमार - नारद सम्वाद : नारद के ज्ञान का सविस्तार वर्णन	
12	15.07.08	42				सनतकुमार - नारद सम्वाद : **भूमा का स्वरूप निरूपण**-भूमा महान अधिष्ठान व अमृतरूप है जगत अल्प-मृत्यु रूप है	
13	14.07.08 [P]	27				गीता-अ०२/२२-२४ : सब शरीरजड़ नाशवान वस्त्र हैं व वस्त्रधारी अजन्मा ज्ञानवान व्यापक पुरुष है वही तू है	
14	15.07.08 [P]	32				देह देही २ पदार्थ हैं, सभी देह मेरी माया से बने हैं, मैं देही व्यापक अजन्मा अविनाशी अद्रष्टो-दृष्टा हूँ वही तू है	
15	16.07.08	42				**क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं**, सभी दृश्य जड़ देहों को क्षेत्र व इनको जानने वाला क्षेत्रज्ञ तू मुझको जान, तीन देह संरचना	
16	16.07.08 [P]	31				आत्मा अकर्म सच्चि० वस्त्रधारी हैं सभी देहरूपी वस्त्र मेरी माया से बने हैं, हम वस्त्र नहीं वस्त्रधारी हैं, यही पूर्णज्ञान है	
17	17.07.08	44				त्रि० वेद द्वारा मल-विक्षेप-आवरण निवृत्ति, शबरी को **नवधा भक्ति** का उपदेश, **श्रीमद्भागवत् में भक्ति निरूपण**	
18	18.07.08	57				दो वस्तु हैं **पुरुष**-सच्चि० अनादि अनंत व **प्रकृति**-असत् अनादि सान्त, जीव पुरुष है पर स्वयं को प्रकृति मानकर दुःख पाता है	***
19	18.07.08 [P]	31				अभेद जीव ईश्वर का स्वरूप निरूपण, निष्काम कर्म-भक्ति-ज्ञान से मल-विक्षेप-आवरण के नाश द्वारा भगवत् प्राप्ति	
20	19.07.08	50				गीता-अ०१५/१६-२० : **क्षर-अक्षर निरूपण**, संसार क्षर व कूटस्थ प्रकृति अक्षर है जो कपट से ब्रह्म को ढाँके है	
21	19.07.08 [P]	32				अद्वितीय निनि० ब्रह्मका यह विश्व-विराट स०सा० लीला है, सभी दृश्य क्षेत्र व सबको देखने वाला क्षेत्रज्ञ मैं ही हूँ	
22	20.07.08	46				**प्रेय-श्रेयसुख निरूपण** : प्रेय या विषय-सुख प्रतिबिम्ब है, नित्य-सुख बिम्ब है, आत्मा सच्चिदानंद है वही तेरा स्वरूप है	
23	20.07.08 [P]	32				मैं अद्वितीय अविकारी नित्य सर्वव्यापी निनि० द्रष्टा हूँ और निजमाया से स०सा० विश्व-विराट रूप धारण करता हूँ	
24	21.07.08	68				**सामान्य ज्ञान** : विद् सत्तायाम, **विशेषज्ञान** : विद विचारणा एवं **वाँगमय वेद**	Cap
25	21.07.08 [P]	28				ओंकार स्वरूप निरूपण	**
26	22.07.08 [P]	31				आध्यात्म रामायण - प्रथमसर्ग ब्रह्म का नि० नि० स्वरूप निरूपण	
27	23.07.08	49				ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या, जगत परमात्मा का विवर्त, प्रेरक साभास माया है वेद के ४ प्रकार	**
28	24.07.08	46				गीता-अ०२/१६ ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या छः उर्मियाँ/लहरें (भूख-प्यास प्राण के,सुख-दुःख मन के,जन्म-मृत्यु स्थूलदेह के धर्म)	**
29	25.07.08	45				सामान्य अंश-इदं : आधार, विशेष अंश-तत् : अधिष्ठान, बुद्धि एवं फलव्याप्ति ५ ज्योतियाँ	**
30	26.07.08	42				ब्रह्म का स्वरूप निरूपण दृग ब्रह्म दृश्य माया जगत एक सपना है स्वप्न एवं जागृत जगत् निद्रा/ माया का कार्य है	**
31	27.07.08	42				श्रेय/नित्य + प्रेय/आभास सुख, सभी देह माया के कार्य हैं, हमारा स्वरूप-सत् चित् आनंद, **परशुराम को लक्ष्मण का ज्ञानोपदेश**	Imp
32	28.07.08	31				ब्रह्म ईश्वर जीव और माया का स्वरूप निरूपण ::: **जीवों का विषाद योग** :::	
33	29.07.08	35				अधिष्ठान ब्रह्म-अध्यास रूप जड़ चेतन प्रकृति स्वप्न सादि व जागृत अनादि निद्रा का कार्य	
34	30.07.08	36				ब्रह्म,माया एवं सृष्टिक्रम	Imp
35	31.07.08	42				भगवान जगत के विवर्तोपादान कारण हैं, जगत ब्रह्म का विवर्त व अज्ञान का परिणाम है।	**